विचारक, विश्वास और इमारते

स्तूप :-

स्तूप का शाब्दिक अर्थ है किसी वस्तु का ढेर । स्तूप का विकास ही संभवतः मिट्टी के ऐसे चबूतरे से हुआ जिसका निर्माण मृतक की चिता के ऊपर अथवा मृतक की चुनी हुई अस्थियों के रखने के लिए किया जाता था । गौतम बुद्ध जीवन की प्रमुख घटनाओं जन्म सम्बोधि धर्मचक्र प्रवर्तन तथा निर्वाण से + सम्बन्धित स्थानों पर भी स्तूपों का निर्माण हुआ ।

साँची का स्तूप :-

साँची भोपाल में एक जगह का का नाम है और यह मध्यप्रदेश में स्थित है।

- साँची में एक प्राचीन स्तूप है, जो की अपनी सुन्दरता के लिए काफी प्रसिद्ध है।
- साँची का यह प्राचीन स्तूप महान सम्राट अशोक द्वारा बनवाया गया था । इस स्तूप का निर्माणकार्य तीसरी शताब्दी ई. पू. से शुरू हुआ।

साँची के स्तूप का संरक्षण :-

।9वीं सदी के यूरोपियों में साँची के स्तूप को लेकर काफी दिलचस्पी थी। क्योकि साँची का स्तूप बेहद सुंदर एवं आकर्षक था

फ्रांस के लोगो ने साँची के पूर्वी तोरणद्वार (जो की काफी सुंदर था) को फ्रांस के संग्रहालय में प्रदर्शित करने के लिए तोरणद्वार को फ्रांस ले जाने की मांग शाहजहाँ बेगम से की।

ऐसी ही कोशिश अंग्रेज लोगों ने भी की लेकिन बेगम नहीं चाहती थी की । साँची के स्तूप का यह तोरणद्वार कहीं और जाए तो बेगम ने अंग्रेजों को और फ्रांसीसियों को बेहद सावधानीपूर्वक तरीके से बनाई गयी एक प्लास्टर प्रतिकृति (copy) थमा दी और वे लोग संतुष्ट हो गए ।

- भोपाल की बेगमों का स्तूप के संरक्षण में बेहद योगदान रहा है, शाहजहाँ बेगम और सुलतान जहां बेगम ने स्तूप के संरक्षण के लिए बहुत से कार्य किये रख रखाव के लिए धन दान किया। संग्रहालय (muscums) बनाने के लिए दान दिया। जॉन मार्शल ने बहुत पुस्तकें लिखी और उनके प्रकाशन के लिए भी बेगमों ने दान दिया ।

ई. पूप्रथम सहस्त्राब्दी (एक महत्वपूर्ण काल) :-

यह काल विश्व के इतिहास में काफी महत्वपूर्ण माना जाता था। क्योंकि इस काल में अनेक चिंतकों को उदय हुआ जैसे बुद्ध, महावीर, प्लेटो, अरस्तु, :- सुकरात खुन्त्सी। इन सब विद्वानों ने जीवन के रहस्य को समझने की कोशिश की।

यज्ञ और विवाद :-

यज्ञ :-

वैदिक परम्परा की जानकारी हमें ऋग्वेद से मिलती है।

ऋग्वेद के अंदर अग्नि इंद्र सोम आदि देवताओं को पूजा जाता है। यज्ञ के समय लोग मवेशी बेटे स्वास्थ्य और लम्बी आयु के लिए प्रार्थना करते हैं। .

- शुरू शुरू में यज्ञ सामूहिक रूप से किये जाते थे। बाद में घर के मालिक खुद यज्ञ करवाने लगे ।
- राजसूये और अश्वमेध यज्ञों का नाम है ये यज्ञ राजा या सरदार द्वारा करवाया जाता था।

वाद विवाद और चर्चाएँ :-

महावीर तथा बुद्ध ने यज्ञों पर सवाल उठाए थे ।

शिक्षक का कार्य होता था एक स्थान से दूसरे स्थान धूम धूमकर अपने

ज्ञान दर्शन से विश्व को जागरुक बनाए ।

- शिक्षक सामान्य लोगो में तर्क वितर्क करते थे।
- चर्चाएँ झोपड़ी, उपवनों में होती थी।
- ऐसे उपबनों में घुमक्कड़ मनीषी ठहरते थे । ऐसे में इन शिक्षकों के अनुयायी बनते चले गए । Q. स्तूप कैसे बनाये गए
- स्तूप ज्यादातर राजाओं द्वारा बनवाए जाते थे ।
  बड़े बड़े राजा धन दान करते थे जिससे स्तूप बनाये जाते थे ।
  बड़े बड़े शिल्पकार और व्यापारी लोग भी दान देते थे जिससे स्तूप बनाये + जाते थे ।
  कभी कभी गाँव के साधारण महिला और पुरुष भी दान दिया करते थे, जिससे स्तूप बनाने में आसानी होती थी।
- भिक्षु और भिक्षुनियाँ भी दान दिया करते थे जिससे स्तूप बनाये जाते थे। इससे यह पता चलता है की ज्यादातर स्तूप दान द्वारा ही बनवाए गए।

स्तूप की संरचना (बनावट)

- स्तूप को संस्कृत भाषा में टीला भी कहा जाता हैं। स्तूप का जन्म एक गोलार्ध लिए हुए मिटटी के टीले से हुआ ।
- इसे बाद में अंड कहा गया।
- धीरे धीरे इसकी बनावट में बदलाव होने लगा ।
- अंड के उपर एक हर्मिका होती थी।
- यह छज्जे जैसा ढांचा देवताओं का घर समझा जाता था ।
- हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहते थे जिस पर अक्सर + एक छत्री लगी होती थी।
- टीले के चारों ओर एक वेदिका होती थी। तोरणद्वार स्तूपों की सुन्दरता को बढ़ाते हैं। उपासक पूर्वी तोरणद्वार से प्रवेश करके स्तूप की परिक्रमा करते थे

स्तूप की खोज :-

प्रत्येक स्तूप का अपना इतिहास हैं ।

अमरावती का स्तूप :-

स्तूप में अवशेषों के रूप में मूर्तियाँ पत्थर मिले जो कि बाद में अलग- जगह ले गए। बंगाल

मद्रास

लंदन

अंग्रेज अफसरों के बागों में अमरावती की मूर्तियां पाई गई हैं।

एक अच्छा इंसान

- रच एल कोल इनका मानना था कि असली कृतियाँ जहाँ की हैं वहीं रखनी चाहिए ।

- साँची का स्तूप बच गया जबकि अमरावती का स्तूप नहीं बच पाया

Q. अमरावती का स्तूप नष्ट क्यों हुआ ?

अमरावती का स्तूप साँची के स्तूप के जैसा ही एक सुंदर स्तूप था। अमरावती का स्तूप आंध्रप्रदेश में था ।

1854 में आंध्रप्रदेश के कमिशनर ने अमरावती की यात्रा की। उन्होंने वहाँ जाकर बहुत से पत्थर और मूर्तियाँ जमा की और उन्हें मद्रास ले गए ।

उन्होंने बताया की अमरावती का स्तूप बोद्धो का सबसे शानदार स्तूप था । 1850 में अमरावती के पत्थर अलग अलग जगहों पर ले जाए जा रहे थे।

कुछ पत्थर कलकत्ता में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल पहुचे ।

- कुछ पत्थर मद्रास पहुचे । कुछ पत्थर लन्दन पहुचे । कई मूर्तियों को अंग्रेजी अफसरों ने अपने बागों में लगवाया ।
- हर नया अधिकारी अमरावती से मूर्ती उठा कर ले जाता था और कहता था की हमसे पहले भी अधिकारी मूर्ती लेकर गए है हमें मत रोको ।

जैन धर्म :-

- जैन धर्म भारत के प्राचीन धर्मों में से एक है। जैन धर्म की शिक्षाएं 6वीं सदी ई. पू से पहले ही भारत में प्रचलन में थी जैन धर्म में जो भी महापुरुष या शिक्षक होता है उसे तीर्थकर कहा जाता है। महावीर उन्ही तीर्थकरों में से सबसे प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है महावीर से पहले 23 तीर्थकर (शिक्षक) हो चुके हैं। महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थकर थे जैन धर्म के पहले तीर्थकर ऋषभ देव थे जैन धर्म के 23वें तीर्थकर पार्श्वनाथ जी थे

महावीर जैन :-

- जन्म 540 ई पू (लगभग) = वैशाली (कुंडग्राम)
- स्थान =

  पिता = सिद्धार्थ

  माता = त्रिशला
- उपाधि = 24वें तीर्थंकर

  अन्य नाम निगंठ नाट पुत

जैन धर्म की शाखाएं :-

दिगम्बर इस शाखा के लोग वस्त्र नहीं पहनते एवं नग्न रहते हैं ।

- श्वेताम्बर इस शाखा के लोग श्वेत वस्त्र धारण करते है ।

जैन धर्म की शिक्षाएं :-

- जैन धर्म की पहली शिक्षा है की पत्थर चट्टान और जल जैसी निर्जीव T चीज़ों में भी जीवन है ।
- जीवों के प्रति अहिंसा जैन धर्म की शिक्षा है की हमें जीवों के साथ किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं करनी चाहिए खासकर इंसानों जानवरों पेड़ पौधों और कीड़े मकोड़ों को नहीं मारना चाहिए ।
- जैन धर्म की तीसरी शिक्षा है की जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म द्वारा निर्धारित होता है अर्थात हम जैसे कर्म करते हैं हमें उसी प्रकार अगला जन्म मिलता है।
- कर्म के चक्र से मुक्ति के लिए त्याग और तपस्या बेहद जरूरी है ।

जैन साधू और साध्वी के पांच व्रत :-

- हत्या न करना ।
- चोरी न करना ।
- झूठ न बोलना ।

बोध धर्म :-

बौद्ध धर्म भारत से निकला एक प्राचीन और महान धर्म है। महात्मा बुद्ध ने बोद्ध धर्म की स्थापना की। बौद्ध धर्म की स्थापना लगभग ई पूर्वी शताब्दी में हुई ।

इसाई और इस्लाम धर्म के बाद यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है।

इस धर्म को मानने वाले ज्यादातर लोग चीन, जापान, कोरिया, थाईलैंड, कंबोडिया श्रीलंका, नेपाल, भूटान और भारत से है।

महात्मा बुद्धः-

- बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध
- पूरा नाम गौतम बुद्ध
- बचपन का नाम सिद्धार्थ
- जन्म 563 ई. पू
- जन्म स्थान लुम्बिनी नेपाल =
- पिता का नाम शुशोधन
- माँ का नाम = मायादेवी (बुद्ध के जन्म के 7 दिन बाद इनकी मृत्यु हुई)
- सौतेली माँ प्रजापति गौतमी
- बुद्ध कें पुत्र का नाम राहुल

बुद्ध द्वारा देखे गए 4 दृश्य :-

1. बूढा व्यक्ति
2. एक बीमार व्यक्ति
3. एक लाश
4. एक सन्यासी बुद्ध की शिक्षाएं

बुद्ध की शिक्षाएं त्रिपिटक में संकलित है। त्रिपिटक को तीन टोकरियाँ भी कहा जाता है। त्रिपिटकः सुत पिटक विनय पिटक अभिधम्मपिटक ।

घोर तपस्या और विषयासक्ति के बीच मध्यममार्ग अपनाकर मनुष्य के दुखों से मुक्ति पा सकता है ।
भगवान का होना अप्रासंगिक ।
यह दुनिया अनित्य है और लगातार बदल रही है।
इस दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं है।
समाज का निर्माण इंसानों ने किया है।
बुद्ध " तुम सब अपने लिए खुद ही ज्योति बनों क्योंकि तुम्हें खुद हो अपनी मुक्ति का रास्ता ढूंढना है।
इस दुनिया में दुःख ही दुःख है और दुःख का कारण है इच्छा लोभ और लालच ।

बौद्ध धर्म की परम्पराएं –

- महायान बुद्ध को भगवान् समझना ।
- हीनयान बुद्ध को इंसान समझना ।

Q. बोद्ध धर्म तेजी से क्यों फैल गया?

बौद्ध धर्म बहुत साधारण था इसमें जाति प्रथा नहीं थी। कोई भी इसे आसानी से अपना सकता था सबके साथ समान व्यवहार किया जाता था। ऊंच नीच का भेदभाव ना था। वर्ण व्यवस्था पर हमला किया । ब्राह्मणीय नियमों का विरोध किया। महिलाओं को भी संघ में शामिल किया जाने लगा। महिलाओं को पुरुषों के जितने अधिकार दिए । बौद्ध धर्म उदर एवम् लोकतांत्रिक था ईश्वर और आत्मा के अस्तित्व को नहीं माना बौद्ध संघ के नियम ज्यादा कठोर नहीं थे। कठोर तप का विरोध करके मध्यम मार्ग अपनाने की बात । पौराणिक हिन्दू धर्म का उदय - हिन्दू धर्म सबसे प्राचीनतम धर्म में से एक है। इसमें वैष्णव और शैव परम्परा शामिल है। वैष्णव जो विष्णु भगवान् को मुख्य देवता

शैव जो शिव भगवान् को मुख्य देवता मानते है । वैष्णववाद में कई अवतारों को महत्त्व दिया जाता है। ऐसा माना जाता है की जब संसार में पाप बढ़ता है तो भगवान अलग अलग अवतारों में संसार की रक्षा करने आते है। इस परंपरा में दस अवतारों की कल्पना की गयी है मूर्तिपूजा की जाती है। शिव भगवान को उनके प्रतीक लिंग के रूप में दर्शाया जाता है

मंदिरों का निर्माण :-

प्रारम्भ में मंदिर एक चौकोर कमरे की तरह होते थे जिसे गर्भगृह कहा जाता था। इनमें एक दरवाजा होता था जिसमें पूजा करने के लिए अंदर जा सकते थे । मूर्ति की पूजा की जाती थी। फिर बाद के समय में गर्भगृह के ऊपर एक ढांचा बनाया जाने लगा जिसे शिखर कहा जाता था। मंदिर की दीवारों पर चित्र उत्कीर्ण किए जाते थे। फिर धीरे धीरे मंदिरों को बनाए जाने वाले तरीके विकसित होते गए अब मंदिरों में विशाल सभास्थल ऊंची दीवार बनाई जाने लग। प्रारम्भ में कुछ मंदिरों को पहाड़ों को काटकर गुफा की तरह बनाया गया था